CLASS: IV
SESSION NO : 2
SUBJECT : (HINDI)
CHAPTER NUMBER: 2
TOPIC: बगुला भगत
SUB TOPIC: प्रस्तावना, आदर्श पठन, नए शब्द

CHANGING YOUR TOMORROW

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

,,शिक्षण उद्देश्य

कहानी वाचन तथा धूर्त व्यक्तियों से दूर रहने की प्रेरणा मिलना

ODM PUBLIC SCHOOL

चिंतन-मनन

ईमानदारी सफल व्यक्ति का आभूषण होती है। ईमानदार व्यक्ति के लिए उसके सत्कर्म, उसके उसूल, उसकी अनुशासन के प्रति निष्ठा ही उसके संस्कार होते हैं। परंतु धूर्त व्यक्ति के लिए धूर्तपंती ही सब कुछ है, जैसे कुएँ में रहने वाले मेंढक के लिए कुआँ ही सब कुछ है। इसलिए धूर्त व्यक्ति से मित्रता न रखने में ही ईमानदार व्यक्ति की भलाई है।

ODM PUBLIC SCHOOL

गरमी का मौसम था। एक तालाब में पानी सूखता जा रहा था। उस तालाब में बहुत–सी मछलियाँ रहती थीं। तालाब के किनारे एक धूर्त और दुष्ट बगुला भी रहता था। एक दिन वह किनारे पर साधु का वेश बनाए बैठा हुआ था और तालाब की मछलियों से अपना पेट भरने का उपाय सोच रहा था।

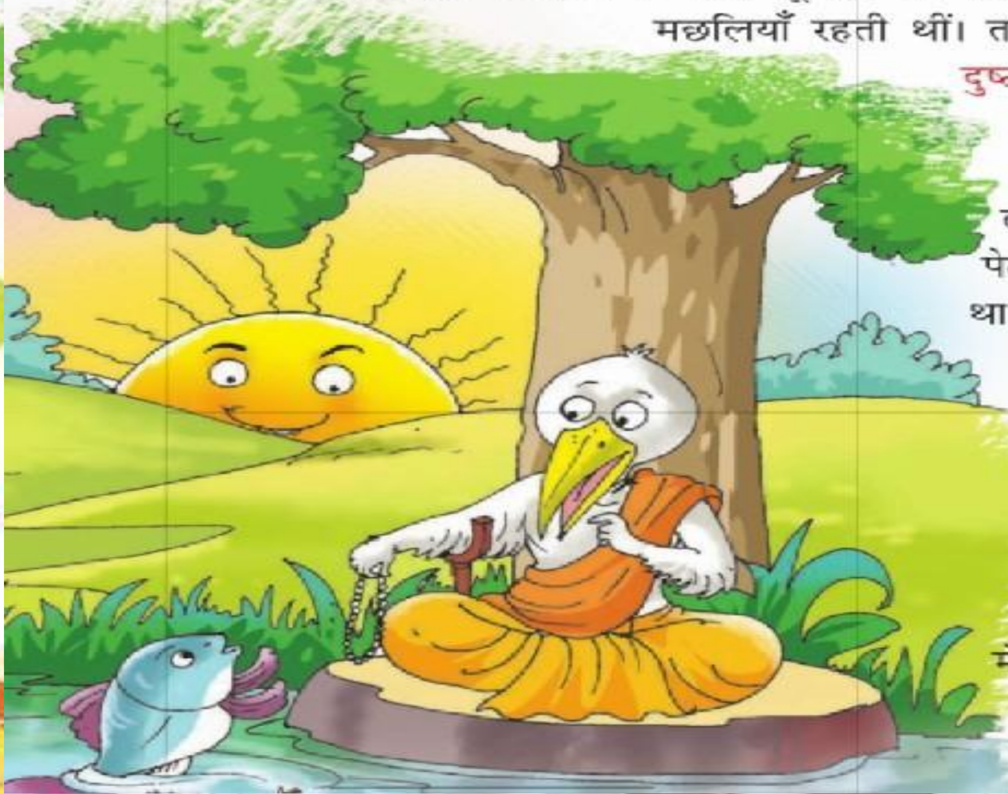

तालाब की मछलियों ने बगुले को बहुत उदास देखा, तो वे उसका कुशल पूछने आ गईं।

"क्या बात है मामा? आज बहुत चिंतित हो।"

"बस तुम्हीं लोगों की चिंता में हूँ।"

"हमारी चिंता में? भला क्यों?"

"इस तालाब का पानी दिनों-दिन कम हो रहा है। गरमी बढ़ रही है। धीरे-धीरे तुम सब मृत्यु के मुख में चली जाओगी।"

"तो हम क्या करें, मामा? तुम्हीं कोई उपाय बताओ न!" मछलियों ने घबराकर कहा।

"अब एक ही उपाय है। मैं एक-एक कर तुम सबको अपनी चोंच में पकड़कर दूर एक बड़े तालाब में छोड़ आऊँ।"

"लेकिन मामा! इस दुनिया में आज तक कोई बगुला ऐसा नहीं हुआ जिसने मछलियों की भलाई के बारे में सोचा हो। भला हम तुम पर कैसे विश्वास कर लें?"

बगुले ने अब अपनी चाल चली-"तुम ठीक कहती हो। जिस तरह एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है, उसी तरह एक बगुले ने सारे बगुला समाज को बदनाम कर रखा है। तुम लोग ऐसा करो, किसी एक मछली को मेरे साथ भेज दो। मैं उसे वह तालाब दिखा लाऊँगा। तुम उससे पूछ लेना। अगर विश्वास हो जाए, तो तुम सब एक-एक कर मेरे साथ चल पड़ना।"

मछलियाँ धूर्त बगुले की चाल में आ गईं। उन्होंने एक मछली को बगुले के साथ भेज दिया। बगुला उसे तालाब दिखाकर ले आया। उस मछली ने बड़े तालाब का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया। उससे प्रभावित होकर सभी मछलियाँ चलने को तैयार हो गईं।

अब बगुला उस तालाब में से एक मछली ले जाता और दूर जंगल में एक बड़े तालाब के किनारे बड़ी चट्टान पर बैठ उसे मारकर खा जाता। इसी तरह उसने तालाब की सारी मछलियाँ खा लीं। चट्टान के पास मछलियों की हड्डियों का ढेर लग गया।

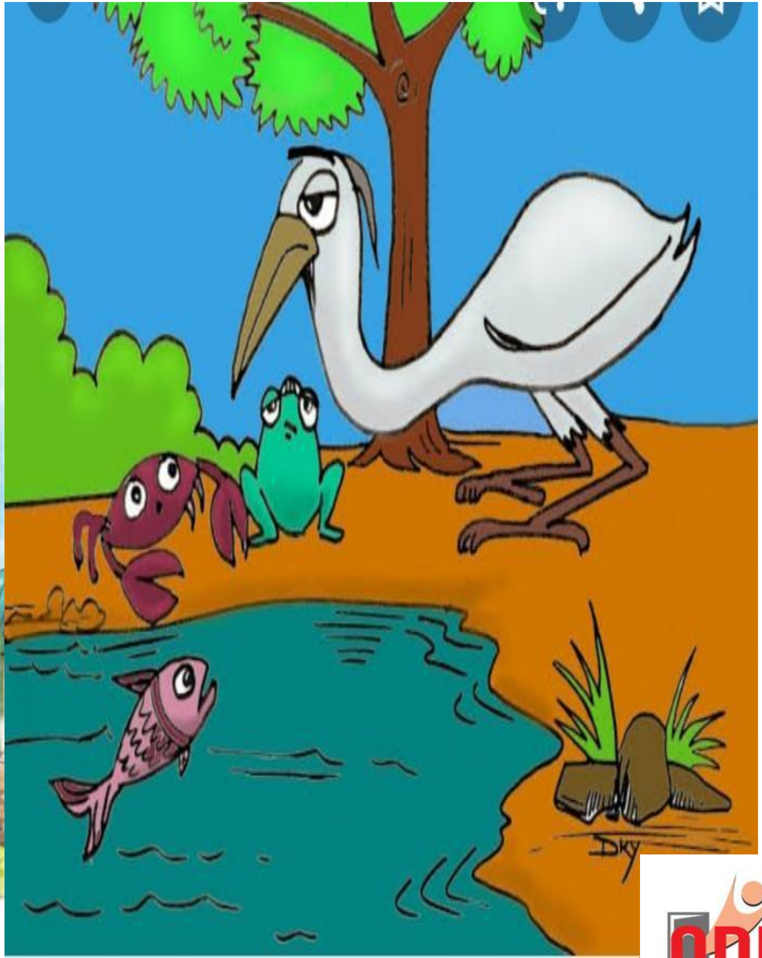

तालाब में केवल एक केकड़ा बचा था। बगुला उसे भी खाना चाहता था। केकड़ा चालाक था। वह बोला–"मैं तुम्हारी चोंच में दबकर नहीं चल सकता। कहो तो गरदन पर बैठकर चलूँ?"

बगुले ने सोचा–"तू किसी तरह चट्टान तक तो चल। फिर मैं खा ही जाऊँगा।" इस तरह उसने केकड़े की बात मान ली।

बगुला अपनी गरदन पर केकड़े को लेकर जब चट्टान के पास पहुँचा, तब केकड़ा मछलियों की हड्डियों का ढेर देखकर सारा मामला समझ गया। उसने बगुले की गरदन में अपने डंक गड़ाए और बोला–"दुष्ट तू मुझे सीधी तरह तालाब के किनारे ले चलता है या गरदन दबा दूँ।"

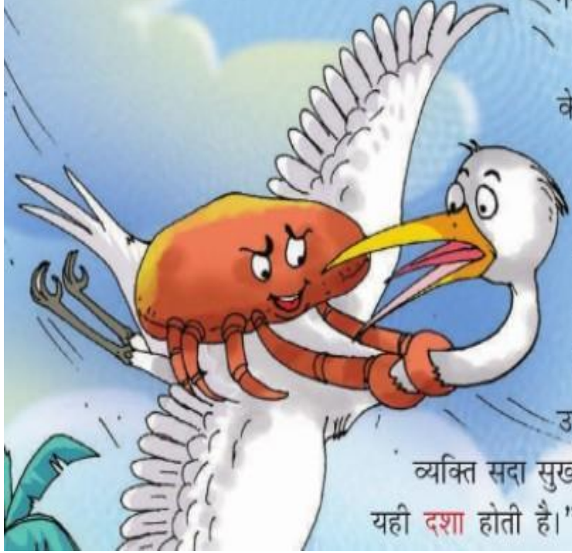

बगुला पीड़ा से कराह उठा। वह केकड़े को चुपचाप तालाब के किनारे ले गया। केकड़े ने कहा–"अब तुझे अपनी करनी का फल भी मिलना चाहिए।" उसने बगुले की गरदन दबाकर उसे खत्म कर दिया। केकड़ा तालाब के पानी में चला गया।

उसने जाते-जाते कहा–"धूर्त और दुष्ट व्यक्ति सदा सुखी नहीं रहते। एक-न-एक दिन उनकी यही दशा होती है।"

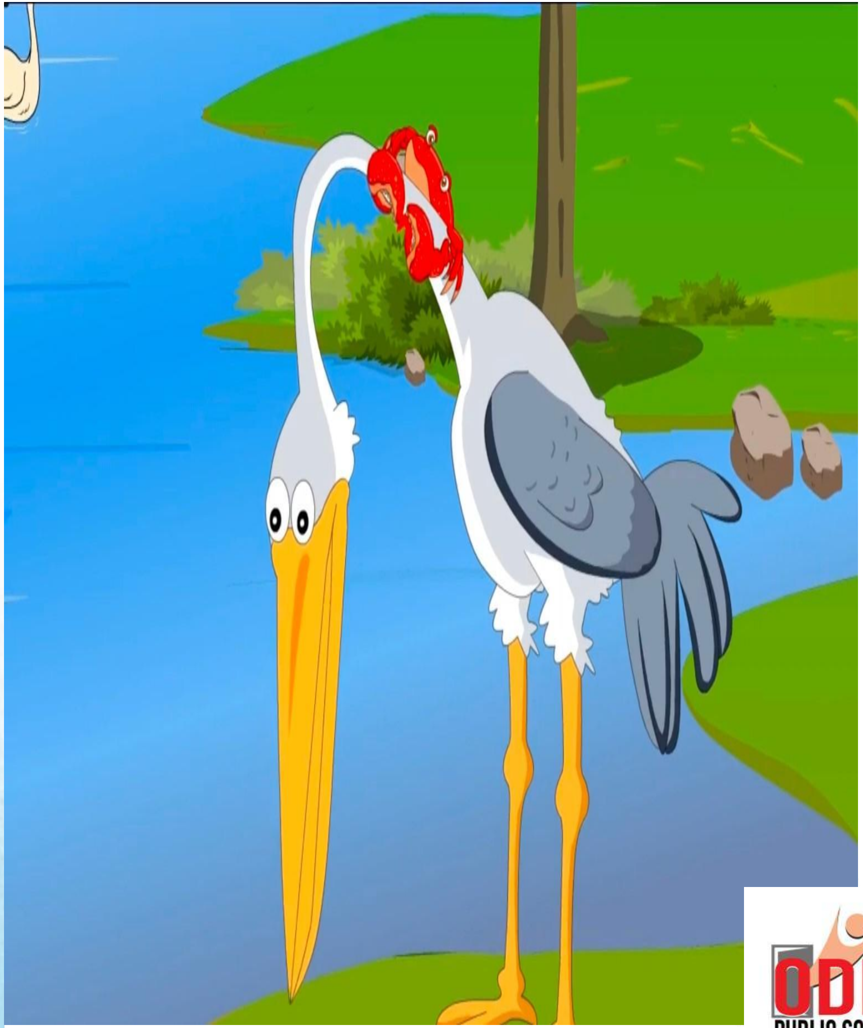

नए शब्द

ईमानदारी
धूर्त
दुष्ट
कुशल
चिंता
उपाय
बदनाम
चालाक
पीड़ा

गृहकार्य

कठिन शब्दों को रेखांकित करें।

ODM PUBLIC SCHOOL

शिक्षण प्रतिफल

बच्चे सही उच्चारण के प्रति ध्यान रखेंगे और नए शब्दों की जानकारी लेंगे

ODM
PUBLIC SCHOOL
SCHOOL OF HUMAN EXCELLENCE

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP